

पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प. का अनुसंधान परिसर द्वारा विकसित फल एवं सब्जियों की उन्नत किस्में



पूर्वी क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का अनुसंधान परिसर
भा.कृ.अनु. परिसर, पोस्ट: बिहार वेटेनरी कॉलेज,
पटना-800 014 (बिहार)

सही अवतरण:

तकनीकी बुलेटिन सं.: आर-46/राँची-19

पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प. के अनुसंधान परिसर
द्वारा विकसित फल एवं सब्जियों की उन्नत किस्में

सम्पादन एवं संकलन:

ए. के. सिंह, आर. एस. पान, बिकाश दास एवं पी. भावना

हिन्दी अनुवाद:

अणिमा प्रभा

प्रकाशक:

भगवती प्रसाद भट्ट

निदेशक, पूर्वी क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का अनुसंधान परिसर
आई.सी.ए.आर परिसर, पोस्ट: बिहार वेटेनरी कॉलेज, पटना-800 014, बिहार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

प्रधान

अनुसंधान केन्द्र, राँची

(पूर्वी क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का अनुसंधान परिसर, पटना)
प्लान्डु, पो. राजाउलातू, राँची-834 010, झारखण्ड

मुद्रक:

दि कम्पोजर्स प्रेस, 2151/9ए/2, न्यू पटेल नगर, नई दिल्ली-110 008

दूरभाष: 011-25707869, मोबाईल: 9810771160

प्रस्तावना

सब्जियों एवं फलों में प्रचुर मात्रा में खनिज, विटामिन, ऐन्टीऑक्सीडेंट होते हैं। विश्व में इनके महत्त्व के प्रति जागरूकता बढ़ गयी है। अतः सब्जियों एवं फलों की माँग दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए सब्जियों एवं फलों का उत्पादन भी बढ़ाया गया है। भारत सब्जी एवं फल उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। इसके लिए सब्जियों एवं फलों की नयी-नयी किस्में एवं संकर बनाये जा रहे हैं। इस क्षेत्र में पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अ.प. का अनुसंधान परिसर, पटना के अनुसंधान केन्द्र, राँची द्वारा अनेक उन्नत तथा उच्च उत्पादन क्षमता युक्त किस्में एवं संकर जारी किये गये हैं। इनमें सब्जियों की 46 किस्में तथा फलों की 3 किस्में विकसित की गयी हैं।

ये किस्में अपने गुणों के कारण अत्यधिक लोकप्रिय हो रही हैं। अतः इनका विवरण एक तकनीकी बुलेटिन के रूप में 'पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अ.प. का अनुसंधान परिसर अनुसंधान केन्द्र, राँची द्वारा 'विकसित किस्में' शीर्षक से प्रकाशित किया जा रहा है। इन किस्मों के विकास में योगदान देने वाले केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों एवं बुलेटिन के लेखकगण को मैं बधाई देता हूँ।

भगवती प्रसाद भट्ट

(भगवती प्रसाद भट्ट)

निदेशक

विषय-सूची

फल

लीची

शाही (2001 ए.आई.सी.आर.पी., एस.टी.एफ.)	1
स्वर्ण रूपा (1996, आई.वी.आर.सी.)	1

कटहल

स्वर्ण मनोहर (2004, आई.वी.आर.सी.)	2
स्वर्ण पूर्ति (2004, आई.वी.आर.सी.)	2

सब्जियाँ

बैंगन

स्वर्ण श्री (2006, गजट नं. 1422)	3
स्वर्ण मणि (2004, गजट नं. 493)	3
स्वर्ण श्यामली (2006, गजट नं. 1422)	4
स्वर्ण प्रतिभा (2004, गजट नं. 493)	4
स्वर्ण शोभा (2006, गजट नं. 398)	5
स्वर्ण अभिलम्ब (2007, गजट नं.655)	5
स्वर्ण शक्ति (संकर) (2004, आई.वी.आर.सी.)	6
स्वर्ण मोहित (संकर) (2008 सी.वी.आर.वी.)	6
स्वर्ण अजय (संकर) (2006, गजट नं. 1422)	7
स्वर्ण नीलिमा (2008, गजट नं. 999)	7
एच.ए.बी.आर.-21 (2013 सी.वी.आर.वी.)	8

टमाटर

स्वर्ण लालिमा (2006, गजट नं.1422)	8
स्वर्ण नवीन (2006, गजट नं. 1422)	9
स्वर्ण वैभव (संकर) (2004, गजट नं. 493)	9
स्वर्ण समृद्धि (संकर) (2004, आई.वी.आर.सी.)	10
स्वर्ण सम्पदा (संकर) (2006, गजट नं. 1422)	10
स्वर्ण विजया (संकर) (2008, गजट नं. 999)	11
स्वर्ण दीप्ति (संकर) (2011, आई.वी.आर.सी.)	11

स्वर्ण अनमोल (संकर) (2013, आई.वी.आर.सी.)	12
मिर्च	12
स्वर्ण प्रफुल्ल (2013, आई.वी.आर.सी.)	12
शिमला मिर्च	13
स्वर्ण अतुल्य (2013, आई.वी.आर.सी.)	13
खीरा	13
स्वर्ण अगेती (2006, गजट नं. 1422)	13
स्वर्ण शीतल (2006, गजट नं. 1422)	14
स्वर्ण पूर्णा (2004, गजट नं. 493)	14
परवल	15
स्वर्ण रेखा (2006, गजट नं. 1422)	15
स्वर्ण अलौकिक (2006, गजट नं. 1422)	15
स्वर्ण सुरुचि (2011, आई.वी.आर.सी.)	16
झींगी	16
स्वर्ण मंजरी (2006, गजट नं. 1422)	16
स्वर्ण उपहार (2006, गजट नं.1422)	17
स्वर्ण सावनी (2013, आई.वी.आर.सी.)	17
लौकी	18
स्वर्ण स्नेहा (2013, आई.वी.आर.सी.)	18
करेला	18
स्वर्ण यामिनी (2013, आई.वी.आर.सी.)	18
नेनुआ	19
स्वर्ण प्रभा (2006, गजट नं. 398)	19
कोहड़ा	19
स्वर्ण अमृत (2009 सी.वी.आर.वी.)	19
फ्रेंच बीन	20
स्वर्ण लता (लत्तीदार) (2007, गजट नं.655)	20
स्वर्ण प्रिया (झाड़ीदार) (2007, गजट नं. 655)	20

मटर	21
स्वर्ण अमर (2004, आई.वी.आर.सी.)	21
स्वर्ण मुक्ति (2006, गजट नं. 1422)	21
बोदी	22
स्वर्ण हरिता (लत्तीदार) (2008, गजट नं. 999)	22
स्वर्ण श्वेता (लत्तीदार) (2004, आई.वी.आर.सी.)	22
स्वर्ण सुफला (लत्तीदार) (2006, गजट नं.1422)	23
स्वर्ण मुकुट (झाड़ीदार) (2011, आई.वी.आर.सी.)	23
सेम	24
स्वर्ण उत्कृष्ट (लत्तीदार) (2006, गजट नं. 1422)	24
स्वर्ण ऋतुवर (लत्तीदार) (2011, आई.वी.आर.सी.)	24
सब्जी सोयाबीन	25
स्वर्ण वसुंधरा (2008, गजट नं. 999)	25
सलाद मटर	25
स्वर्ण तृप्ति (2008, गजट नं. 999)	25

लीची

शाही (2001, ए.आई.सी.आर.पी., एस.टी.एफ)

- फल गहरे लाल रंग के, सुगंधित, अधिक गूदेदार (65%), छोटे बीजयुक्त
- फलों में कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 20.4 प्रतिशत
- मई के दूसरे हफ्ते तक फल पककर तैयार
- लगाने का समय : जुलाई-अगस्त
- औसत उपज 100-120 कि.ग्रा./वृक्ष
- बिहार, झारखंड, उत्तराखण्ड ओडिशा और पश्चिम बंगाल के लिए अनुशंसित।



शाही

स्वर्ण रूपा (1996, आई.वी.आर.सी.)

- फल गहरे लाल रंग के, सुगंधित, अधिक गूदेदार (75%), छोटे बीजयुक्त
- फलों में कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 19.0 प्रतिशत
- फल-चटकन प्रतिरोधी किस्म
- मई के तीसरे सप्ताह में फल पककर तैयार
- औसत उपज 80-100 कि.ग्रा./वृक्ष
- बिहार, झारखंड, उत्तराखण्ड और पश्चिम बंगाल के लिए अनुशंसित।

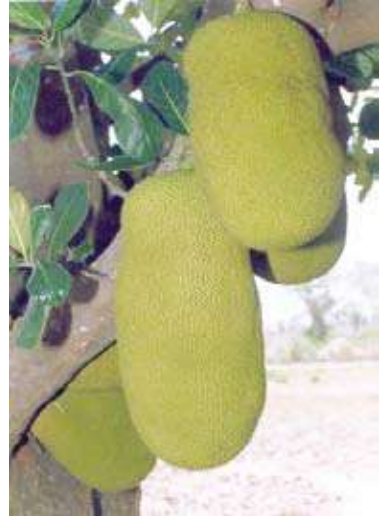


स्वर्ण रूपा

कटहल

स्वर्ण मनोहर (2004, आई.वी.आर.सी.)

- फल सुडौल आकार के उच्च गुणवत्ता युक्त एवं गूदा सुगंधित
- सब्जी के लिए एक अच्छी अगेती किस्म
- पोषक तत्वों एवं प्राकृतिक मिठास से परिपूर्ण किस्म, कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 18.0 प्रतिशत, कुल शर्करा-8.33 प्रतिशत
- फल का औसत वजन 13.7 कि.ग्रा.
- झारखंड एवं सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मनोहर

स्वर्ण पूर्ति (2004, आई.वी.आर.सी.)

- एक समान आकार एवं हरे रंग के फलों वाली देर से पकने वाली किस्म
- फलों की गुणवत्ता उत्तम, कुल घुलनशील ठोस पदार्थ 18.0 प्रतिशत, कुल शर्करा 7.46 प्रतिशत
- सब्जी के लिए उपयुक्त किस्म
- फल का औसत वजन 4.2 किग्रा.
- औसत उपज 120.0 किग्रा./वृक्ष
- झारखंड एवं सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण पूर्ति

बैंगन

स्वर्ण श्री (2006, गजट नं. 1422)

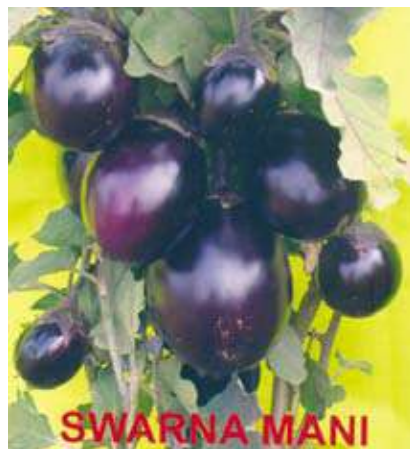
- फल मक्खनी सफेदी युक्त हरे रंग के, गोलकार, मुलायम
- जीवाणुज मुरझा रोग के लिए मध्यम प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का समय जुलाई-अगस्त
- भुर्ता बनाने के लिए उपयुक्त।
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 55-60 टन/हे.
- बिहार, झारखंड एवं सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण श्री

स्वर्ण मणि (2004, गजट नं. 493)

- फल गोल, आकर्षक गहरे बैंगनी रंग युक्त
- जीवाणुज मुरझा रोग के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का समय: जुलाई-अगस्त
- रोपाई के 65-70 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 60-65 टन/हे.
- बिहार, झारखंड एवं इनसे जुड़े क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मणि

स्वर्ण श्यामली (2006, गजट नं. 1422)

- फल औसत आकार के (250 ग्रा.) गोल, आकर्षक गहरे हरे एवं सफेद धारीदार
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी किस्म
- विशेष गुणवत्ता के कारण लोकप्रिय
- क्षेत्र के आधार पर पौधशाला में बुआई का समय जुलाई-सितम्बर एवं फरवरी-मार्च
- रोपाई के 35-40 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 60-65 टन/हे.
- झारखंड, बिहार एवं इनसे जुड़े क्षेत्रों के लिए साल भर खेती हेतु अनुशंसित।



स्वर्ण श्यामली

स्वर्ण प्रतिभा (2004, गजट नं. 493)

- फल: औसत आकार के (250 ग्रा.) लम्बे, आकर्षक गहरे बैंगनी रंग के
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी किस्म
- विशेष गुणवत्ता के कारण लोकप्रिय
- पौधशाला में बुआई का समय जुलाई-अगस्त
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 45-50 टन/हे.
- झारखंड, बिहार एवं इनसे जुड़े क्षेत्रों के लिए साल भर खेती हेतु अनुशंसित।



स्वर्ण प्रतिभा

स्वर्ण शोभा (2006, गजट नं. 398)

- फल गोल, मध्यम आकार के (300-350 ग्रा.), आकर्षक बैंगनी आभा लिये हुए सफेद रंग के
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी
- क्षेत्र के आधार पर पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-सितम्बर
- रोपाई के 55-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 50-60 टन/हे.
- बिहार और झारखंड राज्यों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण शोभा

स्वर्ण अभिलम्ब (2007, गजट नं.655)

- फल लम्बे (30-35 सेमी.), मध्यम आकार के (80-100 ग्रा.), आकर्षक नीले-बैंगनी रंग के
- फोमोप्सिस ब्लाइट रोग प्रतिरोधी
- क्षेत्र के आधार पर पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-सितम्बर
- रोपाई के 55-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 60-70 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू-कश्मीर राज्यों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अभिलम्ब

स्वर्ण शक्ति (संकर) (2004, आई.वी.आर.सी.)

- फल थोड़े लम्बे (15-17 सेंमी.), मध्यम आकार के (250-300 ग्रा.), आकर्षक चमकदार गहरे बैंगनी रंग के
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी
- क्षेत्र के आधार पर पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-सितम्बर
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 70-75 टन/हे.
- बिहार और झारखंड राज्यों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण शक्ति

स्वर्ण मोहित (संकर) (2008 सी.वी.आर.सी)

- फल थोड़े लम्बे (10-15 सेंमी.), मध्यम आकार के (100-150 ग्रा.), आकर्षक चमकदार हल्के बैंगनी रंग के
- फोमोप्सिस ब्लाइट रोग प्रतिरोधी
- क्षेत्र के आधार पर पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-अगस्त
- रोपाई के 55-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 65-75 टन/हे.
- बिहार और झारखंड राज्यों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मोहित

स्वर्ण अजय (संकर) (2006, गजट नं. 1422)

- फल अंडाकार, 10-12 सेंमी. लम्बे, 100-120 ग्रा. वजन के आकर्षण युक्त हल्के बैंगनी रंग के
- जीवाणुज मुरझा रोग और फोमोप्सिस ब्लाइट रोग प्रतिरोधी किस्म
- पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-सितम्बर एवं फरवरी-मार्च
- रोपाई के 50-55 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 70-75 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अजय

स्वर्ण नीलिमा (2008, गजट नं. 999)

- फल गोल, 10-12 सेंमी. लम्बे, 200-250 ग्रा. वजन के आकर्षण युक्त बैंगनी रंग के
- जीवाणुज मुरझा रोग और फोमोप्सिस ब्लाइट रोग प्रतिरोधी किस्म
- पौधशाला में बुआई का उचित समय जुलाई-अगस्त
- रोपाई के 55-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 70-75 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण नीलिमा

एच.ए.बी.आर.-21 (2013 सी.वी.आर.सी)

- फल आकर्षण युक्त काले रंग के, फलों की लम्बाई 18-20 सेंमी. चौड़ाई 7-8 सेंमी., वजन 300-350 ग्रा.
- प्रति पौधा उपज 2.0-3.0 किग्रा., औसत उपज 55-60 टन/हे.
- जोन IV हेतु 2-5 मई, 2013 तक आयोजित इकतीसवें ए.आई.सी.आर.पी. की ग्रुप बैठक में जारी की गयी किस्म।



एच.ए.बी.आर.-21

टमाटर

स्वर्ण लालिमा (2006, गजट नं. 1422)

- फल गहरे लाल, गोल, 120-125 ग्रा. वजन के, कुल घुलनशील ठोस पदार्थ-4 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी, सीमित बढ़वार वाली किस्म
- पौधशाला में बुआई का उचित समय फरवरी- अप्रैल एवं जुलाई-सितम्बर
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 60-70 टन/हे.
- बिहार और झारखंड के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण लालिमा

स्वर्ण नवीन (2006, गजट नं. 1422)

- फल गहरे लाल रंग के अंडाकार, 40-50 ग्रा. वजन के, कुल घुलनशील पदार्थ-5 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा रोग प्रतिरोधी, असीमित बढ़वार वाली किस्म
- पौधशाला में बुआई का उचित समय फरवरी-अप्रैल और जुलाई-सितम्बर
- रोपाई के 60-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज: 60-65 टन/हे.
- बिहार और झारखंड के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण नवीन

स्वर्ण वैभव (संकर) (2004, गजट नं. 493)

- फल गहरे लाल रंग के गोल, 140-150 ग्रा. वजन, ठोस
- दूरवर्ती बाजार के लिए उपयुक्त किस्म
- पौधशाला में बुआई का समय सितम्बर-अक्टूबर
- रोपाई के 65-70 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 90-100 टन/हे.।



स्वर्ण वैभव

स्वर्ण समृद्धि (संकर) (2004, आई.वी.आर.सी.)

- फल लाल, ठोस (40-50 ग्रा.), 8-10 के गुच्छे में, कुल घुलनशील पदार्थ-5.0-6.0 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा और अगेती अंगमारी रोगों के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का फसल के अनुसार समय अगस्त-सितम्बर और अप्रैल-मई
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 100-105 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण समृद्धि

स्वर्ण सम्पदा (संकर) (2006, गजट नं. 1422)

- फल गोल, लाल, बड़े (70-80 ग्रा.), कुल घुलनशील पदार्थ-4.5-5.0 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा और अगेती अंगमारी रोगों के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का फसल के अनुसार समय जुलाई-सितम्बर एवं फरवरी-अप्रैल
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 100-105 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण सम्पदा

स्वर्ण विजया (संकर) (2008, गजट नं. 999)

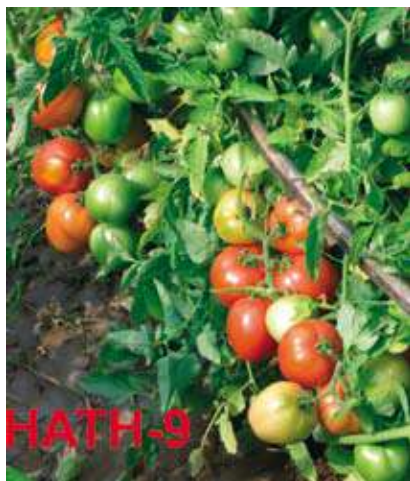
- फल गोल, लाल (80-90 ग्रा.), कुल घुलनशील पदार्थ-0.35-0.4 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा और अगेती अंगमारी रोगों के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का फसल के अनुसार समय जुलाई-सितम्बर एवं फरवरी-अप्रैल
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 100-105 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण विजया

स्वर्ण दीप्ति (संकर) (2011, आई.वी.आर.सी.)

- फल गोल, लाल, बड़े (120-130 ग्रा.), कुल घुलनशील पदार्थ-4.5-5.0 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा और अगेती अंगमारी रोगों के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का फसल के अनुसार समय अगस्त-सितम्बर
- रोपाई के 65-70 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 100-105 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण दीप्ति

स्वर्ण अनमोल (संकर) (2013, आई.वी.आर.सी.)

- फल गोल, हरीतिमा लिए हुए लाल रंग के (60-70 ग्रा.), 5-6 के गुच्छे में
- कुल घुलनशील पदार्थ-4.5-5.0 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा रोग के लिए प्रतिरोधी।
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- संरक्षित खेती के लिए उपयुक्त
- औसत उपज 160-180 टन/हे.
- बिहार, झारखंड और आस-पास (संरक्षित खेती) क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अनमोल

मिर्च

स्वर्ण प्रफुल्ल (2013, आई.वी.आर.सी.)

- फल लम्बे (6-6.5 सेंमी.), स्वाद में तीखे, गहरे हरे रंग के, पकने पर गहरे लाल रंग के
- पौधे की ऊँचाई 90-100 सेंमी.
- जीवाणुज मुरझा रोग के लिए प्रतिरोधी
- स्थानीय किस्म की तुलना में 34 प्रतिशत अधिक उत्पादन (20-25 टन/हे.)
- झारखंड, बिहार और इसके आस-पास के क्षेत्रों जहाँ जीवाणुज मुरझा रोग की विकट समस्या है, के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण प्रफुल्ल

शिमला मिर्च

स्वर्ण अतुल्य (2013, आई.वी.आर.सी.)

- फल गोलाकार, (120-130 ग्रा.), कुल घुलनशील पदार्थ-4.5-5.0 प्रतिशत
- जीवाणुज मुरझा और अगेती अंगमारी रोगों के लिए प्रतिरोधी
- पौधशाला में बुआई का फसल के अनुसार समय अगस्त-सितम्बर एवं दिसम्बर-जनवरी
- रोपाई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 40-45 टन/हे.
- पंजाब, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अतुल्य

खीरा

स्वर्ण अगेती (2006, गजट नं. 1422)

- फल आकर्षक एवं हरे, मध्यम आकार के (200 ग्रा.), लगभग ठोस
- पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के लिए प्रतिरोधी किस्म
- ग्रीष्म ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 45-50 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 30-32.5 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अगेती

स्वर्ण शीतल (2006, गजट नं. 1422)

- फल लम्बे बेलनाकार, मध्यम आकार के (250 ग्रा.), लगभग ठोस
- पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के लिए प्रतिरोधी किस्म
- ग्रीष्म ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 60-65 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 25-30 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और केरल के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण शीतल

स्वर्ण पूर्णा (2004, गजट नं. 493)

- फल लम्बे बेलनाकार, मध्यम आकार के (300 ग्रा.) एवं गहरे हरे रंग के, लगभग ठोस
- ग्रीष्म ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 55-60 दिन बाद फल प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 30-35 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, और आंध्र प्रदेश में खेती हेतु अनुशंसित किस्म।



स्वर्ण पूर्णा

परवल

स्वर्ण रेखा (2006, गजट नं. 1422)

- फल लम्बे (10-12 सेंमी.) हरी धारियों वाले, मुलायम बीज युक्त, आकर्षक
- उत्तम पाक गुणों से युक्त किस्म
- पॉलीथीन की थैली में तैयार पौधे लगाने का समय 15 सितम्बर से 15 नवंबर एवं फरवरी
- औसत उपज 30-35 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में खेती हेतु अनुशंसित किस्म।



स्वर्ण रेखा

स्वर्ण अलौकिक (2006, गजट नं. 1422)

- फल लम्बे (8-10 सेंमी.) धूसर हरे रंग के, मध्यम आकार के, आकर्षक
- पॉलीथीन की थैली में तैयार पौधे लगाने का समय 15 सितम्बर से 15 नवंबर एवं फरवरी
- उत्तम पाक गुणों से युक्त, मिठाई बनाने के लिए उपयुक्त
- औसत उपज 20-25 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अलौकिक

स्वर्ण सुरुचि (2011, आई.वी.आर.सी.)

- फल अंडाकार हल्के हरे रंग के, आकर्षक
- उत्तम पाक गुणों से युक्त, मिठाई बनाने के लिए उपयुक्त
- पॉलीथीन की शैली में तैयार पौधे लगाने का समय 15 सितम्बर से 15 नवम्बर एवं फरवरी
- औसत उपज 25-30 टन/हे.
- झारखंड, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल तथा उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण सुरुचि

झींगी

स्वर्ण मंजरी (2006, गजट नं. 1422)

- फल लम्बे मध्यम आकार के (175 ग्रा.), गहरी धारियों से युक्त, हरे रंग के
- पाउडरी मिल्ड्यू के प्रति सहनशील किस्म
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 65-70 दिन के बाद फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 18-20 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, ओडिशा और आंध्रप्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मंजरी

स्वर्ण उपहार (2006, गजट नं.1422)

- फल लम्बे, मध्यम आकार के (200 ग्रा.), उथली धारियों एवं मुलायम गूदा युक्त
- पाउडरी मिल्ड्यू और डाउनी मिल्ड्यू रोग के प्रति सहनशील किस्म
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 65-70 दिन पश्चात् फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 20-30 टन/हे.
- बिहार, झारखंड, और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण उपहार

स्वर्ण सावनी (सतपुतिया) (2013, आई.वी.आर.सी.)

- शीघ्र फलने-फूलने वाली किस्म लत्तर की लम्बाई 3-4 मी. तक
- फल 6-8 के गुच्छे में, वजन 35-45 ग्रा.
- औसत उपज 20-25 टन/हे.
- झारखण्ड, बिहार एवं आस पास के क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण सावनी

लौकी

स्वर्ण स्नेहा (2013, आई.वी.आर.सी.)

- फल लम्बे (30 से 35 सेंमी.) हल्के हरे रंग के, वजन 900-1000 ग्रा.
- लत्तर की लम्बाई 4-5 मी.
- शीघ्र फलने-फूलने वाले। ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु के लिए विशेष रूप से उपयुक्त
- पाउडरी एवं डाउनी मिल्ड्यू के प्रति सहनशील किस्म
- स्थानीय किस्म अर्का बहार की तुलना में 40 प्रतिशत अधिक उत्पादन (50-55 टन/ हे.)
- झारखंड, बिहार एवं आस-पास के क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण स्नेहा

करेला

स्वर्ण यामिनी (2013, आई.वी.आर.सी.)

- फल (65-70 ग्रा.) गहरे हरे रंग के
- लत्तर की लम्बाई 2.5 से 3 मी.
- शीघ्र फलने-फूलने वाली किस्म ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु के लिए विशेष रूप से उपयुक्त
- पाउडरी एवं डाउनी मिल्ड्यू के प्रति सहनशील किस्म
- स्थानीय किस्म अर्का हरित की तुलना में 49 प्रतिशत अधिक उत्पादन (20 टन/ हे.)
- झारखंड, बिहार एवं आस-पास के क्षेत्रों के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण यामिनी

नेनुआ

स्वर्ण प्रभा (2006 , गजट नं. 398)

- फल पीले, पतले, मध्यम लम्बाई (20-25 सेंमी.) के
- पाउडरी मिल्ड्यू और डाउनी मिल्ड्यू प्रतिरोधी किस्म
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 50-60 दिन के बाद फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 20-25 टन/हे.
- बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण प्रभा

कोहड़ा

स्वर्ण अमृत (2009 सी.वी.आर.सी.)

- फल (2.5-3.0 किग्रा.) गोलाकार, गहरे हरे रंग के
- बुआई के 70-75 दिनों बाद प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार
- बुआई का समय: जून-जुलाई तथा फरवरी-मार्च
- औसत उपज 50-60 टन/हे.
- बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं केरल के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अमृत

फ्रेंचबीन

स्वर्ण लता (लत्तीदार) (2007, गजट नं.655)

- फलियाँ लम्बी बेलनाकार, रेशारहित एवं मोटी, गूदेदार
- फसल के अनुसार बुआई का उचित समय जून का दूसरा पखवाड़ा एवं सितम्बर
- बुआई के 55-60 दिन के बाद फल पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 12-14 टन/हे.
- झारखंड, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखण्ड के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण लता

स्वर्ण प्रिया (झाड़ीदार) (2007, गजट नं. 655)

- फलियाँ चपटी, सीधी, हरे रंग की एवं गूदेदार
- बीज बड़े, कत्थई रंग के, राजमा के लिए उपयुक्त
- बुआई का उचित समय सितम्बर का दूसरा पखवाड़ा एवं फरवरी का पहला पखवाड़ा
- बुआई के 50-55 दिन के बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- औसत उपज 12-14 टन/हे.
- झारखंड, सिक्किम, मेघालय, मणिपुर, नगालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिमी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण प्रिया

मटर

स्वर्ण अमर (2004, आई.वी.आर.सी.)

- फलियाँ गहरे हरे रंग की, लम्बी (10.0 से 15.0 सेमी.), अधिक दानेदार (50-54 प्रतिशत), पतले छिलके युक्त
- पाउडरी मिल्ड्यू रोग प्रतिरोधी किस्म
- बुआई के 80-90 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 20-25 टन/हे.
- झारखंड, बिहार और राजस्थान के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण अमर

स्वर्ण मुक्ति (2006, गजट नं. 1422)

- फलीयाँ लम्बी (9.0-9.5 सेंमी.), हल्के हरे रंग की अधिक दानेदार (50-52 प्रतिशत), 7-8 दाने प्रति फली
- पाउडरी मिल्ड्यू रोग प्रतिरोधी किस्म
- बुआई का समय सितम्बर-अक्टूबर
- बुआई के 80-90 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 20-25 टन/हे.
- झारखंड, बिहार और राजस्थान के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मुक्ति

बोदी

स्वर्ण हरिता (लत्तीदार) (2008, गजट नं. 999)

- फलियाँ गहरे हरे रंग की, अधिक लम्बी (50-60 सेंमी.), बेलनाकार एवं गूदेदार
- मोजैक वाइरस एवं रतुआ (रस्ट) के प्रति सहिष्णु
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त किस्म
- बुआई के 50-55 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों का औसत पैदावार 30-35 टन/हे.
- झारखंड और बिहार के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण हरिता

स्वर्ण श्वेता (लत्तीदार) (2004, आई.वी.आर.सी.)

- फलियाँ गूदेदार, मध्यम लम्बाई (30-35 सें.मी.) वाली, बेलनाकार, सफेद रंग की
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 50-55 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 25-30 टन/हे.
- झारखंड और बिहार के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण श्वेता

स्वर्ण सफुल्ला (लत्तीदार) (2006, गजट नं.1422)

- फलियाँ सीधी, लम्बी (30-35 सेंमी.), हरे रंग की
- ग्रीष्म ऋतु में फल बेधक के लिए सहिष्णु
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 50-55 दिन के बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 25-30 टन/हे.
- झारखंड, बिहार, केरल और कर्नाटक के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण सुफला

स्वर्ण मुकुट (झाड़ीदार) (2011, आई.वी.आर.सी.)

- फलियाँ गूदेदार, मध्यम लम्बाई (30-35 सेंमी.) वाली, बेलनाकार, सफेद रंग की
- ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में खेती के लिए उपयुक्त
- बुआई के 45-50 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 12-15 टन/हे.
- झारखंड और बिहार के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण मुकुट

सेम

स्वर्ण उत्कृष्ट (लत्तीदार) (2006, गजट नं. 1422)

- फलियाँ चपटी, सीधी, हरे रंग की, गूदेदार (10-12 सेंमी.)
- एन्थ्रेक्नोज, मोजैक वायरस एवं फली बेधक के प्रति सहिष्णु
- बुआई जुलाई-अगस्त में
- बुआई के 110-120 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 35-40 टन/हे.
- झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण उत्कृष्ट

स्वर्ण ऋतुवर (लत्तीदार) (2011, आई.वी.आर.सी.)

- फलियाँ चपटी, सीधी, हरे रंग की, गूदेदार (10-12 सेंमी.)
- एन्थ्रेक्नोज, मोजैक वायरस एवं फली बेधक के प्रति सहिष्णु
- बुआई मई के दूसरे पखवाड़े में
- बुआई के 75-80 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 35-40 टन/हे.
- झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब के लिए अनुशंसित
- यह किस्म बेमौसम बरसाती खेती के लिए उपयुक्त है।



स्वर्ण ऋतुवर

सब्जी सोयाबीन

स्वर्ण वसुंधरा (2008, गजट नं. 999)

- फलियाँ (5-6 सेंमी.) हरी, मोटे दानों से भरी
- रतुआ-प्रतिरोधी किस्म
- बुआई जून-जुलाई में, 75-80 दिन बाद फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 15-20 टन/हे.
- झारखंड एवं बिहार के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण वसुंधरा

सलाद मटर

स्वर्ण तृप्ति (2008, गजट नं. 999)

- हरी, चपटी फलियाँ रेशारहित (7-10 सेंमी.)
- पूरी फलियाँ सलाद एवं सब्जी हेतु उपयुक्त
- बुआई अक्तूबर-नवम्बर में, 70-75 दिनों में फलियाँ पहली तुड़ाई के लिए तैयार
- फलियों की औसत पैदावार 25-30 टन/हे.
- झारखंड, बिहार एवं पश्चिम बंगाल में खेती के लिए अनुशंसित।



स्वर्ण तृप्ति

किस्मों/संकरों के विकास में योगदान

1. स्वर्ण रूपा: एच.पी. सिंह, आई. एस. यादव और एन.एन. रेड्डी
2. स्वर्ण मनोहर: विशाल नाथ, मथुरा राय, बिकास दास और एस. कुमार
3. स्वर्ण पूर्ति: विशाल नाथ, बिकास दास, मथुरा राय और एस. कुमार
4. स्वर्ण श्री: वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद और डी. पी. सिंह
5. स्वर्ण मणि: वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, डी.पी. सिंह, ए. बी. पाल, आर. एस. पान, मथुरा राय और जे.पी. शर्मा
6. स्वर्ण प्रतिभा: वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, आर. एस. पान, मथुरा राय, ए.के. सिंह और जे.पी. शर्मा
7. स्वर्ण प्रतिभा: वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, आर. एस. पान, मथुरा राय, ए.के. सिंह और जे.पी. शर्मा
8. स्वर्ण शोभा: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
9. स्वर्ण अभिलम्ब: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
10. स्वर्ण शक्ति: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, मथुरा राय, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
11. स्वर्ण अजय: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
12. स्वर्ण नीलिमा: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
13. स्वर्ण मोहित: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
14. एच.बी.आर-21: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा, एस. कुमार और पी. भावना
15. स्वर्ण लालिमा: वी.एस.आर. लालकृष्ण प्रसाद, मथुरा राय, आर.एस. पान, ए.के. सिंह और जे.पी. शर्मा
16. स्वर्ण नवीन: वी.एस.आर. प्रसाद, मथुरा राय, आर.एस. पान, ए.के. सिंह और जे.पी. शर्मा
17. स्वर्ण वैभव: वी.एस.आर. लालकृष्ण प्रसाद, डी.पी. सिंह, आर.एस. पान और मथुरा राय
18. स्वर्ण समृद्धि: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
19. स्वर्ण संपदा: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
20. स्वर्ण विजया: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
21. स्वर्ण दीप्ति: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
22. स्वर्ण अनमोल: ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा, पी. भावना एवं एस. कुमार

23. स्वर्ण प्रफुल्लः ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा, पी. भावना एवं एस. कुमार
24. स्वर्ण अतुल्यः ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा, पी. भावना एवं एस. कुमार
25. स्वर्ण अंगेतीः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, डी.पी. सिंह, आर.एस. पान और मथुरा राय
26. स्वर्ण शीतलः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, डी.पी. सिंह, मथुरा राय और आर.एस. पान
27. स्वर्ण पूर्णाः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, डी.पी. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय और ए.के. सिंह
28. स्वर्ण रेखाः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद और डी.पी. सिंह
29. स्वर्ण अलौकिकः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद और डी.पी. सिंह
30. स्वर्ण सुरुचिः ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
31. स्वर्ण मंजरीः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, डी.पी. सिंह, मथुरा राय और आर.एस. पान
32. स्वर्ण उपहारः वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, आर.एस. पान, मथुरा राय, ए.के. सिंह और जे.पी. शर्मा
33. स्वर्ण स्नेहाः ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा, पी. भावना एवं एस. कुमार
34. स्वर्ण सावनीः पी. भावना, ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा व एस. कुमार
35. स्वर्ण यामिनीः पी. भावना, ए.के. सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा व एस. कुमार
36. स्वर्ण प्रभाः ए.के. सिंह, आर.एस. पान, मथुरा राय, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
37. स्वर्ण अमृतः ए. कश्मीर सिंह, आर.एस. पान, जे.पी. शर्मा और एस. कुमार
38. स्वर्ण लताः आर.एस. पान, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, मथुरा राय और ए.बी. पाल
39. स्वर्ण प्रियाः आर.एस. पान, वी.एस.आर. कृष्णा प्रसाद, मथुरा राय और ए.बी. पाल
40. स्वर्ण अमरः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार, जे.पी. शर्मा, मथुरा राय, वी.एस. आर.के. प्रसाद और बिकास दास
41. स्वर्ण मुक्तिः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार, जे.पी. शर्मा, मथुरा राय, बिकास दास और कृष्ण प्रसाद
42. स्वर्ण हरिताः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, जे.पी. शर्मा, एस. कुमार, मथुरा राय और कृष्ण प्रसाद
43. स्वर्ण श्वेताः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, जे.पी. शर्मा, एस. कुमार, मथुरा राय और कृष्ण प्रसाद
44. स्वर्ण सुफलाः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार, जे.पी. शर्मा, मथुरा राय और कृष्ण प्रसाद
45. स्वर्ण मुकुटः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार और जे.पी. शर्मा
46. स्वर्ण उत्कृष्टः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, जे.पी. शर्मा, एस. कुमार, मथुरा राय और कृष्ण प्रसाद
47. स्वर्ण ऋतुवरः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार और जे.पी. शर्मा
48. स्वर्ण वसुंधराः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार और जे.पी. शर्मा
49. स्वर्ण तृप्तिः आर.एस. पान, ए.के. सिंह, एस. कुमार और जे.पी. शर्मा

[illegible]